

सारांश

प्रस्तावना

छपरा बॉक्साइट और लैटराइट खदान मध्यप्रदेश राज्य के कटनी जिले की बहोरीबंद तहसील के छपरा गाँव में अवस्थित है. पहले उत्खनन पट्टा 20.06.1984 से 19.06.1994 की 10 वर्ष की अवधि के लिए मंजूर किया गया था. 20.06.1994 से 19.06.2014 की अवधि के लिए उत्खनन पट्टे का मान्य नवीकरण किया गया है. उत्खनन योजना को प्रति वर्ष 50,000 टन बॉक्साइट के लक्षित उत्खनन के लिए आईबीएम नागपुर द्वारा उनके दिनांक 14.02.2008 के पत्र सं. एमपी/ कटनी/ बॉक्साइट/ एमपीएलएन/ आर-12/07-08/ नागपुर के माध्यम से अनुमोदित किया गया है.

अवस्थिति

उत्खनन पट्टा क्षेत्र मध्यप्रदेश राज्य के कटनी जिले की बहोरीबंद तहसील के छपरा गाँव के क्षेत्राधिकार में अवस्थित है. भौगोलिक दृष्टि से उत्खनन पट्टा क्षेत्र निम्नलिखित अक्षांश-देशांतरों के बीच स्थित है:

अक्षांश	उत्तर 23° 36' 14" से 23° 36' 30"
देशांतर	पूर्व 80° 11' 04" से 80° 11' 17"

परियोजना का विवरण

भूपृष्ठ और जलनिकास

उत्खनन पट्टा क्षेत्र ऊँचा-नीचा है और सामान्यतः उसकी ढलान दक्षिण-पश्चिम की ओर है. पट्टा क्षेत्र की अधिकतम ऊँचाई उत्तर की ओर औसत समुद्र तल से 420 मीटर ऊपर है और निम्नतम ऊँचाई दक्षिण की ओर औसत समुद्र तल से 413 मीटर ऊपर है.

क्षेत्र का मुख्य जलनिकास उत्तर-पूर्व से निकलने वाली मौसमी जलधाराओं से होकर है जो दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती हैं और अंततः हिरण नदी में मिल जाती हैं.

उत्खनन की प्रमुख विशेषताएँ

- उत्खनन कार्य पूर्णतः मैनुअल पद्धति से करने का प्रस्ताव है.
- उत्खनन-योग्य आकलित भंडार :
बॉक्साइट : 3,65,762 टन
लैटराइट : 68,580 टन
- अधिकतम उत्पादन दर लगभग 50,000 टन प्रति वर्ष होगी.
- खदान की संभावित उपयोगिता अवधि 13 वर्ष है.
- ड्रिलिंग कार्य जैक हैमर या हैंड होल से करना प्रस्तावित है.
- ब्लास्टिंग का काम गन पाउडर और सेफ्टी फ्यूज की सहायता से किया जाएगा.
- कचड़े और अयस्क की लोडिंग और डंपिंग के लिए टिप्परो का इस्तेमाल किया जाएगा.
- कुल कचड़ा लगभग 15,000 टन प्रति वर्ष अनुमानित है.
- कुल मिलाकर लगभग 76 व्यक्तियों की जरूरत होगी.

पर्यावरणीय विवरण

मौसम वैज्ञानिक आँकड़े (मानसून 2008 से पहले)

क्र.सं.	मानदंड	आँकड़े
1	अधिकतम तापमान (⁰ सी)	43.2
2	न्यूनतम तापमान (⁰ सी)	16.0
3	अधिकतम सापेक्ष आर्द्रता (%)	91.0
4	न्यूनतम सापेक्ष आर्द्रता (%)	3.0
5	कुल वर्षा (मिमी)	शून्य
6	मुख्यतः हवा की दिशा	दक्षिण-पश्चिम से

परिवेशीय वायु गुणवत्ता

आधारस्तरीय सूचना के रूप में खदान स्थल के चारो ओर 10 कि.मी. के दायरे के अध्ययन क्षेत्र की परिवेशीय वायु गुणवत्ता ली गई. कच्ची सड़कों से उड़ने वाली धूल, घरेलू ईंधन को जलाने से उठने वाला धुआँ और सड़कों पर चलने वाली गाड़ियाँ क्षेत्र में प्रदूषण के विविध स्रोत हैं.

अध्ययन अवधि के दौरान मॉनीटर की गई परिवेशीय वायु गुणवत्ता के परिणामों का सारांश निम्नानुसार है।

नमूने का स्थान	एसपीएम	आरपीएम	SO ₂	NO _X
उत्खनन पट्टा क्षेत्र	132.6	40.6	8.0	11.4
पड़वारा	155.6	48.3	9.6	13.8
अमोच	151.1	48.2	9.7	13.6
छपरा	160.6	52.1	10.4	15.0
घुघरी	123.1	39.6	7.8	11.0
निमास	133.6	40.9	8.1	11.5
*औद्योगिक क्षेत्र के लिए एनएएएक्यू मानक वार्षिक औसत / 24 घंटे	360/500	120/150	80/120	80/120
**आवासीय क्षेत्र के लिए एनएएएक्यू मानक वार्षिक औसत / 24 घंटे	140/200	60/100	60/80	60/80

ध्वनि स्तर

क्षेत्र में ध्वनि उत्पन्न करने वाले प्रमुख स्रोतों की पहचान करने के लिए अध्ययन-अवधि में पट्टा क्षेत्र के एक और बफर ज़ोन के पाँच स्थानों अर्थात् कुल 6 स्थानों को मॉनीटर किया गया. विभिन्न स्थानों पर ध्वनि के स्तर के आँकड़े संक्षेप में निम्नानुसार हैं.

अध्ययन अवधि में ध्वनि स्तर [(इकाई : डेसिबल (ए))]

	एन-1	एन-2	एन-3	एन-4	एन-5	एन-6
न्यून.	37.0	36.7	35.8	36.9	36.4	35.9
अधिक.	59.3	59.8	55.6	56.1	55.8	55.8
दि.स.	53.4	53.7	51.5	52.2	51.8	51.6
मानक	75	75	55	55	55	55
रा.स.	38.5	38.7	37.3	38.5	38.7	38.7
मानक	70	70	45	45	45	45
न्यून.	रिकार्ड किया गया न्यूनतम ध्वनि स्तर					
अधिक.	रिकार्ड किया गया अधिकतम ध्वनि स्तर					
दि.स.	दिवस सममान					
रा.स.	रात्रि सममान					
दि.रा.स.	दिवस-रात्रि सममान					

ध्वनि उत्पन्न करने वाले प्रमुख स्रोत हैं- उत्खनन से जुड़ी गतिविधियाँ, वाणिज्यिक गतिविधियाँ, ट्रैफिक और ब्लास्टिंग. वर्तमान उत्खनन क्षेत्र के भीतर और बाहर परिवेशीय ध्वनि स्तर कानूनी सीमाओं के काफी भीतर है.

यातायात सघनता

निगरानी-अवधि के दौरान कटनी-छपरा सड़क पर बफर ज़ोन के भीतर यातायात की विशेषताओं और प्रमात्रा का अध्ययन किया गया, जिसका सारांश निम्नानुसार है।

गाड़ी का प्रकार	कटनी-छपरा सड़क पर कुल यातायात (24घंटे में)
एचएमवी	75
एलएमवी	40
दुपहिया और तिपहिया	120
कुल	235

मॉनीटर किए गए उक्त आँकड़ों को देखने से पता चलता है कार्यदिवसों में कटनी-छपरा सड़क पर कुल 235 गाड़ियाँ चलती हैं।

जल पर्यावरण

भूतल जल

पट्टा क्षेत्र में कोई नदी या बारहमासी नल्ला नहीं है। मौसमी जलधाराएँ मुख्यतः दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर बहती हैं। पट्टा क्षेत्र ऊँचा-नीचा है, इसलिए खड्डों में शायद ही कभी जलजमाव होता है। असाधारण रूप से अधिक वर्षा होने की स्थिति में आवश्यक होने पर पंपिंग की जाएगी।

भूमिगत जल

अध्ययन क्षेत्र मूलतः वेदर्ड फ्रैक्चर्ड ज़ोन है, और वहाँ जलीय चट्टानों (अक्वीफायर्स) की कमी है। भूमिगत जलस्तर 410 आर.एल. के भूतल स्तर से 12 मी. से लेकर 15 मी. तक नीचे हैं। इस प्रकार भूमिगत जलस्तर 395 मी. आर.एल. से लेकर 398 मी. आर.एल. तक है। ऐसी संभावना है कि 5वें वर्ष के अंत तक उत्खनन कार्य जल स्तर से 15 मी. ऊपर तक यानी 413 मी. आर.एल. तक ही होगा।

जल गुणवत्ता

अध्ययन क्षेत्र में जल की गुणवत्ता का पता लगाने के लिए भूमिगत जल के तीन नमूने लेकर उनकी जाँच की गई। जल की गुणवत्ता के परिणामों का सारांश निम्नानुसार है।

क्र.सं.	मानदंड	भूमिगत जल	आईएस:10500 केअनुसार वांछनीय सीमा
1.	पीएच (pH)	6.9 - 7.8	6.5 - 8.5
2.	कुल घुले हुए ठोस	213 - 265	500
3.	CaCO ₃ के रूप में कुल कठोरता	244 - 278	300
4.	Cl यानी क्लोराइड	14 - 23	250
5.	F यानी फ्लुओराइड	0.33 - 0.60	1.0
6.	गैदलापन	2 ङ 4	5

उपर्युक्त तालिका को देखने से स्पष्ट है कि विश्लेषित नमूनों की भौतिक-रासायनिक विशेषताएँ पेय जल के लिए निर्धारित आईएस:10500 मानकों की वांछनीय सीमाओं के काफी भीतर हैं.

भूमि पर्यावरण

भूमि का उपयोग

7.383 हेक्टेयर का संपूर्ण पट्टा क्षेत्र सरकारी बंजर भूमि है. उत्खनन पट्टा क्षेत्र तथा अध्ययन क्षेत्र में भूमि-उपयोग का विवरण इस प्रकार है.

उत्खनन पट्टा क्षेत्र का वर्तमान भूमि-उपयोग

क्र.सं.	श्रेणी	भूमि उपयोग (हेक्टे. में)
1	उत्खनन	0.05
2	ओवरबर्डेन डम्प	0.03
3	ऊपरी मृदा के लिए भंडार	0.02
4	अन्य	0.20
5	अबाधित क्षेत्र	7.083
कुल		7.383

जनगणना 2001 के आँकड़ों के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग का ग्राम-वार अध्ययन किया गया. अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग का सारांश निम्नानुसार है.

अध्ययन क्षेत्र में भूमि-उपयोग

भूमि-उपयोग	क्षेत्र (हेक्टे. में)	प्रतिशत (%)
वन भूमि	5145	16
सिंचित भूमि	4498	14
असिंचित भूमि	10774	35
खेती-योग्य बंजर भूमि	7270	23
खेती के लिए अनुपलब्ध भूमि	3713	12
कुल	31400	100

मृदा पर्यावरण

मृदा गुणवत्ता

अध्ययन क्षेत्र में मृदा की गुणवत्ता का पता लगाने के लिए तीन स्थानों से मृदा के नमूने एकत्र किए गए. जाँच परिणामों का सारांश निम्नानुसार है.

मृदा की गुणवत्ता की जाँच के परिणाम

क्र.सं.	मानदंड	परिणाम
1	पीएच (pH)	6.2-7.0
2	ऑर्गेनिक कार्बन (%)	0.39-0.48
3	उपलब्ध नाइट्रोजन (कि.ग्रा./हेक्टेयर)	202-258
4	उपलब्ध फास्फोरस (कि.ग्रा./हेक्टेयर)	25.8-34.2
5	उपलब्ध पोटैशियम (कि.ग्रा./हेक्टेयर)	123-155

उक्त तालिका को देखने से सपष्ट है कि सभी नमूने साधारण उर्वर प्रकृति के हैं.

जैविक पर्यावरण

वनस्पतियाँ

अध्ययन क्षेत्र में पाई जाने वाली वनस्पतियाँ शुष्क और पत्ते झाड़ने वाली किस्म की हैं. नीम, बबूल, साजा, धाओ, सलाई, तेंदू, और खैर अध्ययन क्षेत्र में आम तौर पर पाए जाने वाले वृक्ष हैं.

जीवजंतु

जीवजंतुओं की आबादी में कोई विशेष लक्षण नहीं दिखा. छिटपुट रूप से कहीं-कहीं जानवर रहते हैं. वन क्षेत्र में पक्षियों की संख्या भी बहुत अधिक नहीं है. उत्खनन पट्टा क्षेत्र में अनुसूची I में उल्लिखित कोई जानवर नहीं है. अध्ययन क्षेत्र में नेवले, लोमड़ी, खरहे, चमगादड़, गिलहरी आदि जानवर पाए जाते हैं.

संभावित पर्यावरणीय प्रभाव और उन्हें दूर करने के उपाय

परिवेशीय वायु गुणवत्ता पर प्रभाव

प्रस्तावित विस्तार कार्य, अयस्क निकालने और उसके परिवहन तथा कचड़े के भंडारण से एसपीएम संकेंद्रण में अतिरिक्त वृद्धि होगी. डीज़ल से चलने वाले उपकरणों और माल के आवागमन के लिए बनाई जाने वाली सड़कों पर चलने वाली गाड़ियों के कारण स्ल्फर डाइऑक्साइड (SO₂) और नाइट्रोजन के ऑक्साइडों (NO_X) का थोड़ा रिसाव होने की संभावना हो सकती है. आईएससी-ईआरएमओडी मॉडल के आधार पर खदान से अयस्क निकालने

के समय एसपीएम का अधिकतम पूर्वानुमानित संकेंद्रण उत्खनन पट्टा क्षेत्र में 139.48 माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर और अध्ययन क्षेत्र में 162.50 माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर होगा.

वायु प्रदूषण नियंत्रण के उपाय

क्र.सं.	धूल का स्रोत	नियंत्रण के उपाय
1	हॉल रोड	-दोनों तरफ कंपैक्शन, ग्रेडेशन और जलनिकास व्यवस्था. -समुचित रखरखाव. -जल का नियमित छिड़काव.
2	ट्रकों का चलना	-ट्रकों पर क्षमता से अधिक माल नहीं लादना. -अयस्क ढोते समय तिरपाल से ट्रक को ढकना. -गतिसीमा को कड़ाई से लागू करना.
4	खदान का खड्डा	-काम के स्थान पर नियमित जल छिड़काव.
5.	पेड़ लगाना	-इलाके की स्थानीय प्रजातियों के पेड़ लगाना प्रस्तावित. -कचड़ा डालने के स्थान पर और सड़कों के किनारे तेजी से बढ़ने वाले पेड़ लगाना.

ध्वनि के स्तर पर प्रभाव

उत्पादन में वृद्धि के कारण माल ढुलाई और हॉलेज गाड़ियों के बढ़ने के फलस्वरूप ध्वनि के वर्तमान स्तर में थोड़ी वृद्धि होगी, विशेष रूप से सक्रिय कार्यक्षेत्र के भीतर. प्रस्तावित उत्खनन गतिविधियों से निकटतम स्थित बस्ती (जो उत्खनन पट्टा क्षेत्र की सीमा से लगभग 1400 मी. दूर है) यानी निमास गाँव में किसी अतिरिक्त ध्वनि के उत्पन्न होने की आशंका नहीं है.

ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण के उपाय

ध्वनि स्तर को निर्धारित सीमा में रखने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जाएँगे:

- हॉलेज गाड़ियों और टिप्परों की गति सीमित रखना.
- ब्लास्ट होल ड्रिलिंग को केवल दिन के समय में ही करना, शार्प ड्रिलिंग बिट्स का प्रयोग करना और ड्रिलिंग के समय इष्टतम दबाव पर कंप्रेस्ड एयर डालना.
- ब्लास्ट से उत्पन्न होने वाली ध्वनि के स्तर और धरती के कंपन को कम करने के लिए क्रमबद्ध ब्लास्टिंग सहित नियंत्रित ब्लास्टिंग तकनीकें अपनाना.

- कम घनत्व वाले विस्फोटकों का प्रयोग करना ताकि विस्फोट की तुलना में हलन-चलन अधिक हो.
- खदान के ध्वनिप्रवण क्षेत्र में कामगारों के कान ढकने/ उन्हें प्लग करने के साधन उपलब्ध कराना.

जल पर्यावरण पर प्रभाव

- जल की कुल दैनिक आवश्यकता 8 घनमीटर है.
- खदान से कोई अपशिष्ट जल नहीं निकलेगा, इसलिए भूतल जल और भूमिगत जल का प्रदूषित होना संभव नहीं है.

जल संरक्षण के उपाय

जल संरक्षण के लिए निम्नलिखित उपाय किए जाएंगे:

- खदान की उपयोगिता अवधि के बीत जाने के बाद खड्डों पर वन लगाया जाएगा.
- धूल को दबाने के लिए जल छिड़काव यंत्र का प्रयोग किया जाएगा.
- खदान मशीनरी की सूखी धुलाई की जाएगी ताकि जल की खपत कम हो.

भूमि पर प्रभाव

वर्तमान में कोर ज़ोन अर्थात् उत्खनन पट्टा क्षेत्र की भूमि अधिकांशतः टूटी-फूटी और बंजर है. कृषि या वनाच्छादन बिलकुल नहीं है. खड्डे की सीमा के बाहर खदान कार्यालय के पास वनीकरण किया गया है. इसलिए भविष्य में वनीकरण अथवा जलाशय के कारण भूमि उपयोग की शैली पर जो भी प्रभाव होगा, वह सकारात्मक होगा. खुली खदान के अयस्क निकाले जा चुके हिस्से को फिर से भर दिया जाएगा.

चूँकि संपूर्ण उत्खनन गतिविधि कोर ज़ोन तक ही सीमित रहेगी, इसलिए बफर ज़ोन में कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा. उत्खनन कार्य की तीव्रता कम होगी क्योंकि अधिकांश भाग पहले से ही टूटा-फूटा है. प्रस्तावित पुनर्भरण और दक्षिणी ढलान की ओर निर्मित मालाकार नालियों और बाँध के कारण, यदि बफर ज़ोन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव पड़ने वाला होगा तो वह भी नहीं पड़ सकेगा.

वनस्पति और जीवजगत पर प्रभाव

क्षेत्र में विरल वनस्पति है और अध्ययन क्षेत्र में सघन वनस्पतियाँ नहीं हैं. वनस्पतियाँ छिटपुट रूप से उगी हैं. प्रस्तावित उत्खनन कार्य के कारण वनस्पतियों और जीवजंतुओं की सामुदायिक संरचना में कोई परिवर्तन नहीं होगा.

सामाजिक-आर्थिक प्रभाव

चूँकि कोर जोन में कोई गाँव या मानव बस्ती नहीं है, इसलिए अबादी का विस्थापन नहीं होगा।

उत्खनन कार्यों से सकल आर्थिक उत्पादन और बुनियादी सुविधाओं में काफी वृद्धि होगी। इसलिए कुछ हद तक सामाजिक-आर्थिक विकास की संभावना है। इसके अलावा उत्खनन कार्यों से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार में वृद्धि होगी और परिणामतः आसपास के गाँवों के लोगों को लाभ होगा।

पर्यावरण प्रबंध योजना

वायु गुणवत्ता प्रबंधन

- सर्वाधिक धूल ड्रिलिंग और ब्लास्टिंग से पैदा होती है, इन कार्यों को रुक-रुक कर और केवल कठोर चट्टानों वाले खुले हिस्सों को तोड़ने के लिए किया जाएगा।
- धूल को असरदार ढंग से दबाना सुनिश्चित करने के लिए हॉल रोड्स पर जल के नियमित छिड़काव के लिए छिड़काव की सुविधा से युक्त जल टैंकों का इस्तेमाल किया जाएगा।
- कामगारों को, खास तौर पर ड्रिलिंग और लोडिंग का काम करने वालों को धूलरोधी मास्क उपलब्ध कराए जाएँगे।

कचड़ा प्रबंधन

प्रति वर्ष लगभग 15,000 टन कचड़ा निकलेगा। अवस्तरीय अयस्क बिलकुल नहीं निकलेगा।

ओवरबर्डेन को दो चरणों में हटाया जाएगा। पहले ऊपरी मृदा हटाई जाएगी और उसे 10 टन के टिप्परो से भंडारण के लिए ले जाया जाएगा। इस भंडार का उपयोग बाद में ओवरबर्डेन और खदान के कचड़े से फिर से भरे गए हिस्सों पर फैलाने के काम में लाया जाएगा।

भविष्य में कोई बाह्य डंपिंग नहीं की जाएगी। उत्खनित क्षेत्र को फिर से भरने का काम साथ-साथ ही किया जाएगा जिसे भीतरी डंप ही माना जाएगा। किनारों को 28⁰ की ढलान दी गई है और निष्क्रिय किनारों पर वनस्पतियाँ लगाई गई हैं।

वनीकरण

खनिज निकाले जा चुके क्षेत्र को फिर से भर दिया जाएगा और स्थानीय प्रजातियों के विविध प्रकार के पौधों की सघन रोपाई कर उसे फिर से ठीक कर दिया जाएगा। खदान के परित्यक्त खड्डे में जलाशय का निर्माण किया जाएगा जिससे अध्ययन क्षेत्र में लंबे समय तक जल की उपलब्धता में वृद्धि होगी। अवधारणात्मक अवधि में चरणबद्ध रूप से 1.253 हेक्टेयर में हरित पट्टी बागवानी/ वनीकरण प्रस्तावित है। खदान के उत्खनन-पश्चात् चरण में 7.383 हेक्टेयर भूमि

का वनीकरण किया जाएगा. क्षेत्र में उगाई जाने वाली वृक्ष प्रजातियाँ धूल सहने में सक्षम, तेजी से बढ़ने वाली और फलदार होनी चाहिए ताकि स्थायी हरित पट्टी का निर्माण हो सके.

सामाजिक-आर्थिक लाभ

पट्टाधारक पट्टा क्षेत्र के भीतर और उसके आस-पास समाज कल्याण गतिविधियाँ चलाता है. निम्नलिखित कार्यक्षेत्रों में समाज कल्याण गतिविधियाँ चलाने की योजना है:-

- डाक्टरी सहायता
- प्राथमिक शिक्षा
- कृषि सुधार
- व्यवसाय प्रशिक्षण और
- सरकार के कार्यक्रमों का लाभ लेने में सहयोग

पर्यावरणीय निगरानी कार्यक्रम

सीपीसीबी तथा पर्यावरण और वन मंत्रालय के दिशानिर्देशों के आधार पर तैयार किए गए कार्यक्रम के अनुसार प्रत्येक वर्ष वायु, जल, ध्वनि और मृदा संबंधी सभी पर्यावरणीय मानदंडों की नियमित निगरानी की जाएगी ताकि आधारभूत स्थिति में होने वाले किसी परिवर्तन का पता लगाया जा सके. जबतक उत्खनन कार्य चलता रहेगा, तबतक निगरानी कार्यक्रम भी चलेगा. खदान प्रबंधक के नियंत्रण में पर्यावरण प्रबंधन योजना के कार्यान्वयन के लिए एक छोटी इकाई स्थापित की जाएगी. यह इकाई पर्यावरण की नियमित निगरानी करेगी, पर्यावरण संबंधी प्रतिवेदन को तैयार कर प्रस्तुत करेगी और हरित पट्टी का विकास करने जैसे अन्य कार्य करेगी.

निष्कर्ष

पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव के आकलन (ईआईए) के अध्ययन से यह पता चलता है कि धूलकण-प्रदूषण में वृद्धि होगी जिसे जल छिड़काव और अयस्क को बंद ट्रकों में ढोकर नियंत्रित किया जाएगा. उत्खनन कार्यों का परिवेशीय पर्यावरण और भूपर्यावरण पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ेगा. इसके अलावा उत्खनन कार्य से क्षेत्र में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा होगा. उत्खनन कार्य के जारी रहने तक निगरानी कार्यक्रम भी जारी रहेगा. पर्यावरणीय गुणवत्ता का वांछित स्तर प्राप्त करने के उद्देश्य से, पर्यावरण सुरक्षा हेतु लगभग रु.28 लाख का पूँजी बजट और रु.34 लाख का आवर्ती बजट तैयार किया गया है. इस तरह, सार रूप में यह कहा जा सकता है कि खदान के विकास का क्षेत्र के सामाजिक -आर्थिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और क्षेत्र का दीर्घकालिक विकास होगा.